खंड-क

प्रश्न. (क) सामाजिक सुरक्षा एवं सामाजिक जीवन की समस्त आनंदपूर्ण गतिविधियों को बनाए रखने में पड़ोस का महत्व है। पड़ोस सामाजिक जीवन के ताने-बाने का संपूर्ण महत्वपूर्ण आधार है।

(ख) पड़ोसी के साथ संबंध रखना हमारे हित में इस तरह है कि किसी भी आवस आकस्मिक आपदा अथवा आवश्यकता के समय रिश्तेदारों को बुलाने में समय लगता है परंतु पड़ोसियों को बुलाने एवं मदद लेने में समय नहीं लगता।

(ग) पड़ोसी से निभाने के लिए हमें पड़ोसियों से प्यार करना चाहिए, उनसे सहानुभूति ~~नहीं~~ रखनी चाहिए, सुख-दुख का आदान-प्रदान करना चाहिए तथा उसके शोक व आनंद के क्षणों में स शामिल होना चाहिए।

(घ) 'विश्वस्त सहायक' से अभिप्राय है ~~कि पड़ोसी~~ एक ऐसे सहायक ~~होते हैं~~ या बन सकते ~~हैं~~ जिन पर विश्वास किया जा सके।
पड़ोसी को विश्वस्त सहायक इसलिए कहा गया है क्योंकि किसी भी आकस्मिक आपदा के समय हम सिर्फ पड़ोसियों पर ही भरोसा कर सकते हैं और उनसे मदद ले सकते हैं क्योंकि ऐसे समय में किसी अनजान व्यक्ति से मदद की पुकार करना

Previous Pathshala

सही नहीं है।

(ङ) विश्व-बंधुत्व की बात लेखक ने इसलिए कही है क्योंकि जो लोग अपने पड़ोसियों से भाईचारा ही मधुर एवं एकता के संबंध नहीं रखसकते वह लोग विश्व एकता, एवं शांति एव भी नहीं रख सकते।

(च) पड़ोस का महत्व

खंड - ख

प्र.2 (क) दर्शकों ने जादूगर का जादू देखा और दंग रह गए।

(ख) नवाब साहब ने तौलिया ~~झाड़कर~~ झाड़कर सामने बिछा लिया।

(ग) जैसे ही नवाब साहब ने खीरे का स्वाद लिया वैसी ही उसके आनंद में पलकें मूँद आईं।

(घ) संज्ञा आश्रित उपवाक्य

Previous Pathshala

प्र॰3 (क) बस की खिड़की से न झाँका जाए।

(ख) धर्मगुरु के द्वारा कामिल बुल्के की बात मान ली गई।

(ग) तुम्हारे द्वारा पढ़ा क्यों नहीं जाता ?

(घ) वह उठ - बैठ नहीं सकता।

प्र॰5 (क) नया :→ गुणवाचक विशेषण
→ एकवचन
→ पुल्लिंग
→ विशेष्य 'पान' की विशेषता बताता है

(ख) यह : → सार्वनामिक विशेषण
→ एकवचन
→ विशेष्य 'साइकिल' की विशेषता बताता है
→ ~~पुल्लिंग स्त्री~~

Previous Pathshala

(ग) माँ की : → जातिवाचक संज्ञा
→ स्त्रीलिंग
→ एकवचन
→ संबंध कारक ~~→ साथ क्रिया का कर्म~~
→

(घ) सदा ही : → ~~रीतिवाचक~~ कल क्रियाविशेषण
→ 'सुनने' क्रिया की विशेषता बताता है।
→

प्र.६ (क) हास्य रस

(ख) एक अचंभा देखो रे भाई!
ठाढ़े सिंह चरावै गाय
पहले पूत पीछे माई
चेला के गुरु लागै पाई।

(ग) वीर रस
(ङ) हास

Previous Pathshala

खंड -ग

प्र०6 (क) पानवाला हंसमुख स्वभाव व्यक्ति था क्योंकि जब हालदार साहब ने उससे मूर्ति पर लगे चश्मे के बारे में पूछा तो वह आँखों ही आँखों में हँसा, उसका पेट हिला और उसने अपना पान थूककर हालदार साहब को जवाब दिया और उसने हालदार साहब द्वारा कैप्टन के बारे में पूछे गए हर सवाल का एक मजाकिया तरीके से जवाब दिया है, परन्तु जब हालदार साहब ने मूर्ति पर चश्मा न होने का आश्चर्य जताया तो पान वाले की आँखों में आँसू आए और उसने हालदार साहब को कैप्टन की मृत्यु के बारे में बताया और उदास हो गया इससे प्रतीत होता है कि उसके हृदय में संवेदना थी।

(ख) गर्मियों की उमस भरी शाम बालगोबिन भगत द्वारा गाए जाने वाले मधुर गीत एवं उनका इन गीतों पर मुग्ध होकर नाचने लगना एवं सभी अन्य लोगों का उस उनका साथ देना एवं उन्हीं की तरह गीतों में लीन हो जाना शाम को शीतल एवं मनमोहक बना देता था।

(ग) फादर बुल्के की मृत्यु पर लेखक को आहत इसलिए हुई क्योंकि फादर का निधन जहरबाद से हुआ जो कि एक गंभीर बीमारी है। लेखक का कहना यह था कि जिस व्यक्ति की रगों में अमृत दौड़ता हो, जो व्यक्ति इतना विनम्र, मीठा बोलने वाला

Previous Pathshala

है, सबको इतना स्नेह करने वाला है उसे जहरबाद जैसी गंभीर बीमारी से नहीं मरना चाहिए था।

(ङ) बिस्मिल्ला खाँ ईश्वर से सुर माँगते थे। व उनकी हमेशा यही दुआ रहती थी कि अल्लाह उन्हें मीठा सुर बख्शें। वह ऐसा इसलिए माँगते थे क्योंकि उनका मानना यह था कि वह अब भी शहनाई उतनी अच्छी नहीं बजाते और वह चाहते थे कि उनका सुर व शहनाई वादन इतना मीठा हो कि सुनने वालों की आँखों से आँसू आ जाएँ।

इससे यह पता चलता है कि बिस्मिल्ला खाँ एक बहुत ही सीधे व सरल व्यक्ति थे जो अपनी कला के प्रति पूर्णरूप से सम्मि समर्पित थे एवं अपनी कला को बेहतर बनाने के लिए निरंतर अभ्यास करते थे एवं दुआ करते थे।

7 (क) लेखक ने सेकंड क्लास का टिकट इसलिए खरीदा क्योंकि उन्हें भीड़ से बचकर एकांत में अपनी कहानी के संबंध में कुछ सोचना था और उन्हें ज्यादा दूर भी नहीं जाना था। तथा उन्हें खिड़की से प्राकृतिक दृश्यों का आनंद भी लेना था।

(ख) लेखक को लगा कि सेकंड क्लास का डिब्बा निर्जन होगा और वह अकेले ही सफर करते हुए जाएँगे परंतु ऐसा नहीं था क्योंकि डिब्बे में पहले से ही एक सफेदपोश सज्जन बैठा हुआ था।

Previous Pathshala

(ग) सज्जन व्यक्ति ने जब लेखक को डिब्बे में आते हुए देखा तो उनकी आँखों में एकांत चिंतन में बाधा एवं उनके चेहरे पर असंतोष का भाव दिखाई दिया। लेखक ने उनके व्यवहार से यह अनुमान लगाया कि वह भी कहानी के लिए सूझ की चिंता में हैं या खीरे जैसी अपदार्थ वस्तु का शौक करते देखे जाने पर उन्हें असंतोष हो रहा है।

प्र.8 (क) भोलानाथ अपने पिता के बहुत करीब थे। वह उनके साथ ही सोते थे, खाते थे, नहाते थे, खेलते थे और उनका सारा दिन उनके पिताजी के साथ ही व्यतीत होता था।
उनका कहना था कि उनका उनकी माँ से सिर्फ दूध तक का ही रिश्ता है। उनकी माँ उन्हें उनके बालों में सरसों का तेल डालती, उबटन करती एवं चोटी गूँथती थीं जिससे उन्हें बहुत कष्ट होता था।
भोलानाथ ने जब साँप को देखा तो वह बहुत घबरा गए एवं गिरने के कारण लहुलुहान हो गए और दौड़कर सीधे अपनी माँ के पास चले गए और पिताजी के लाख बुलाने पर भी नहीं आए। क्योंकि भोलनाथ को कष्ट सहने के बाद अपनी माँ की गोद में शांति का अनुभव हुआ और माँ के प्यार, वात्सल्य, एवं करुणा ने उन्हें अपनी ओर खींच लिया।

Previous Pathshala

(ख) इंग्लैंड की महारानी के भारत आगमन पर अखबारों में महारानी के परिधान को लेकर जो समस्या उठी उसके बारे में छापा गया, उनके यहाँ काम करने वालों, खाना बनाने वालों की पूरी जीवनीयाँ छापीं गई, महारानी की जन्मपत्री छापी गई, यहाँ तक कि उनके महल में रहने वाले कुत्तों के बारे में भी बताया गया। ऐसा लग रहा था मानो शंख इंग्लैंड में बज रहा है और सुनाई यहाँ दे रहा है। जब महारानी भारत आ रही थीं तब भारत में सबसे बड़ी विपदा यह थी कि जार्ज पंचम की लाट पर नाक नहीं हैं और इस विषय पर भी कई खबरे छपी थी।

महारानी के आने के दिन सब अखबार शांत इसलिए थे क्योंकि जार्ज पंचम की लाट पर नाक का जो मसला था वह हल हो चुका था और खबर यह थी लाट पर जिंदा नाक लगाई गई है जो बिल्कुल असली लगती है। सरकारी अफ़सरों ने कई प्रयास किए मूर्ति पर नाक लगवाने के यहाँ तक कि भारत देश के महान पुरुषों की नाक काटकर लगाने को भी कह दिया। उनका यह रवैया उनकी छोटी मानसिकता एवं झूठा सम्मान पाने की भावना दर्शाता है, यह दर्शाता है कि उनकी ज़हन पर देश के महान लोगों के लिए कोई सम्मान नहीं है। और इस रवैये से देश की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँची थी इसलिए सभी अखबार शांत थे।

Previous Pathshala

प्र० (ख) कवि 'जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया' इससे कवि यह कहना चाहते हैं कि मनुष्य जितना अपने अतीत की बातों को याद करेगा उसे उतना ही दुख होगा एवं वह जितना सम्मान, धन, प्रतिष्ठा पाने के पीछे भागेगा उतना ही भ्रमित हो जाएगा एवं अपने आज को नहीं जी पाएगा और दुख को अपनी ओर आकर्षित करेगा।

(क) ~~(ग)~~ परशुराम विश्वामित्र से लक्ष्मण की शिकायत ~~इन शब्दों में करते~~ है कुछ इस तरह करते हैं। वह उनसे यह कहते हैं कि विश्वामित्र मैं इस बालक को सिर्फ तुम्हारे धैर्य के कारण ही छोड़ रहा हूँ ~~अगर तुम इसे समझा दो~~ नहीं तो यह बालक मेरे हाथों मारा जाएगा। यह बालक बहुत ही कटुवादी, दुष्ट है और मैं चाहता तो इसे मार देता बस तुम्हारे शील के कारण ही रुका हूँ।

(घ) 'कन्यादान' कविता में माँ अपनी बेटी को चेहरे पर न रीझने की, अत्याचार न सहने की, आभूषणों के बंधनों में न बंधने की सीख देती है, और लड़की बनने की परंतु लड़की जैसी न दिखाई देने की सीख देती है। और मजबूत बनने को कहती है। ~~परम्~~ परंपरागत माँ अपनी बेटियों को परिवार की सेवा करने की व उनका हर हाल में सम्मान करने की एवं उनके खिलाफ न जाने की सलाह देती है जो कि कविता में माँ के द्वारा दी गई सीख से भिन्न है।

Previous Pathshala

~~(5) संगतकार जब सुरों की गहराई में खो जाता है, मस्तिष्क की ऊँचाई में खो जाता है तो उसकी आवाज़ में हिचक सुनाई देती है।~~

(5) संगतकार की आवाज़ में हिचक इसलिए सुनाई देती है क्योंकि वह अपने स्वर को मुख्य गायक के स्वर से ऊपर नहीं उठाना चाहता। वह मुख्य गायक को हमेशा सँभाले रखता है एवं उसके स्वर को इधर-उधर नहीं जाने देता एवं उसकी लय को बाँधे रखता है और जब मुख्य गायक कहीं अटक जाता है तो उसकी समर्थन करता है।

प्र.10 (क) कवि बादलों से गरजने का आग्रह कर रहे हैं क्योंकि बादलों का गरजना क्रांति लाने के रूप में दिखाया गया है। उनका मानना है कि बादल बदलाव लाने के प्रतीक हैं। वह बादलों से आग्रह कर रहे हैं कि वह सबके जीवन को नया बना दो एवं उसे खुशियों से भर दो।

(ख) बादलों की तुलना काले घुँघराले बालों से की गई है। कवि बादलों की तुलना बच्चों की कल्पना से भी करते हैं। बादल बड़े और काले हैं इसलिए उनकी तुलना ऊपर दी गई चीज़ों से की गई है।

(ग) कवि के अनुसार नूतन कविता बादलों के समान यानि कि क्रांति एवं बदलाव लाने वाली होनी चाहिए एवं उनका मनुष्य के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ना चाहिए

Previous Pathshala

एवं लोगों के जीवन को नया बना देना चाहिए।

खंड-घ

प्र.11 (ग) अनु निबंध

आत्मविश्वास और सफलता

प्रस्तावना : आत्मविश्वास और सफलता का एक बहुत ही पुराना व गहरा रिश्ता है। आत्मविश्वास जहाँ-वहाँ है वहाँ-वहाँ सफलता है। सफलता पाने के कुछ जरुरी बिन्दु हैं जैसे मेहनत, त्याग, अनुशासन आदि परंतु यह सब कुछ व्यर्थ है अगर किसी भी मनुष्य मे आत्मविश्वास नहीं है तो। आत्मविश्वास की कमी मनुष्य को ले डूबती है एवं उसे अपने पथ से भ्रमित कर देती है।

आत्मविश्वास से तात्पर्य : आत्मविश्वास दो शब्दों से मिलकर बना है आत्म एवं विश्वास। आत्म का अर्थ है खुद पर और विश्वास का अर्थ है भरोसा यानि कि स्वयं पर भरोसा। आत्मविश्वास सफलता की पहली सीढ़ी है। मनुष्य को अपनों पर भरोसा करना चाहिए परंतु सबसे ज्यादा भरोसा उसे स्वयं पर करना चाहिए। आत्मविश्वास की कमी बहुत लोगों मे खलती है,

Previous Pathshala

क्योंकि लोग अपने आप को छोड़कर दूसरों पर भरोसा करते हैं। आत्मविश्वास जन्म से नहीं आता, उसे अपनी अंदर लाना पड़ता है और यह सिर्फ पूर्ण एवं सही ज्ञान के हो सकता है।

→ आत्मविश्वास सफलता के लिए क्यों आवश्यक : मान लीजिए कि आपने अपनी परीक्षा के लिए कड़ी मेहनत करी है, ~~परन्तु~~ और आप एक प्रश्न का जवाब नहीं दे पा रहे हैं और आप भ्रमित हो गए हैं कि कौनसा उत्तर सही है? अगर ऐसी स्थिति में मनुष्य में आत्मविश्वास हो तो वह तो वह हर कठिन से कठिन जवाब का उत्तर दे सकता है। सोचिए अगर एडिसन को अपने ऊपर विश्वास ना होता तो क्या बल्ब का आविष्कार होता? अगर जेम्स वॉट को आत्मविश्वास ना होता तो क्या आज स्टीम इंजन होता? इस दुनिया में जितने भी सफल लोग हैं उन्हें अपने ज्ञान पर, अपनी कला पर, अपने आप पर पूरा विश्वास है तभी वह सफल हैं। अगर वह लोग अपने आस-पास के लोगों पर भरोसा करते तो आज शायद सफल नहीं होते। आत्मविश्वास के बगैर सारी मेहनत व्यर्थ है और आत्मविश्वास ही सफलता की ओर पहला कदम है।

→ अहंकार और आत्मविश्वास में अंतर : अहंकार और आत्मविश्वास में ज़मीन-आसमान का फर्क है। अहंकारी व्यक्ति अपने ज्ञान पर इतना अहंकार करता है कि वह गलत चीज़ को भी सही मानता है ~~एवं~~ दूसरों को नीचा दिखाने के लिए

Previous Pathshala

कुछ भी कर सकता है। परंतु आत्मविश्वासी व्यक्ति ~~मन~~ अपनी गलतियों को स्वीकारता है एवं दूसरों को सुनता है और उनकी मदद करता है एवं दूसरों के भले के बारे में सोचता है। अहंकारी व्यक्ति को लगता कि पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा ज्ञानी सिर्फ वही है और वह आगे बढ़ने की भी नहीं सोचता और अपने नाश का कारण स्वयं होता है इसके विपरीत आत्मविश्वासी व्यक्ति हमेशा ज्यादा से ज्यादा ज्ञान प्राप्ती की कोशिश करता है और अधिक सफलता प्राप्त करता है।

<u>उपसंहार</u> : आत्मविश्वास एक मनुष्य के जीवन में बहुत आवश्यक है, उसकी सफलता में उसका सबसे बड़ा हाथ होता है। इंसान को इस बात का सबसे ज्यादा ध्यान रखना चाहिए कि उसका आत्मविश्वास अहंकार ना बन जाए जो स्वयं के लिए व दूसरों के लिए भी हानिकारक हो। आत्मविश्वास व्यक्ति को अपने अंदर लाना पड़ता है। यह ज्ञान से आता है। अगर आपको अपने ज्ञान व प्रतिभा पर भरोसा है तो इस दुनिया में कोई चीज नहीं है जो आप हासिल ना कर पाओ। अतः मैं यह कहना चाहूँगी कि आत्माविश्वासी राम बनो अहंकारी सह रावण नहीं।

Previous Pathshala

प्र०12. पत्र

(5)

बंगला नं-7 .वायरलेस ऑफिस के पीछे
एस. ए. एफ रोड, कम्पू,
ग्वालियर, म.प्र.

दिनांक : 29/02/2020

सप्रेम नमस्ते!

मधुर स्मृतियाँ। पिताजी मैं यहाँ कुशल हूँ और आशा है कि आप और परिवार भी कुशल होंगे। आज मैं आपको एक ~~खुश~~ खुशखबरी देना चाहती हूँ। मुझे अंतर्विद्यालयी क्रिकेट प्रतियोगिता के लिए स्कूल टीम का कप्तान चुना गया। यह सब सिर्फ आपकी और मेरी मेहनत के कारण हुआ। आपने हर कदम पर मेरा साथ दिया और मेरे क्रिकेट के प्रति लगाव को इतना बढ़ा ~~दिया~~ दिया कि आज अपनी टीम की ~~कप्त~~ कप्तान हूँ। पिताजी जब मेरा इस पद के लिए नाम लिया गया तो मैं बहुत खुश हुई और सिर्फ आपकी याद आई कि आपकी वजह से ~~अ~~ मैंने अपने सपने का एक छोटा ~~सा हिस्सा~~ मगर महत्वपूर्ण हिस्सा पूरा कर लिया। मैं इसके लिए सदैव आपकी आभारी रहूँगी।

पिताजी आज के लिए बस इतना ही। भाई ~~म~~ को और माँ को मेरी ~~प्रणाम~~ प्यार देना एवं दादीजी को मेरा प्रणाम कहना और अपना ख्याल ~~रखना~~ रखना।

Previous Pathshala

आपकी आज्ञाकारी बेटी
क. ख. ग

Previous Pathshala

प्र013 विज्ञापन

हस्तकला प्रदर्शनी

वार्षिकोत्सव पर एक विशेष कार्यक्रम

विद्यार्थियों की लगन व मेहनत से निर्मित हस्तकला की वस्तुएँ

विद्यालय में पहली बार

कुछ नया और बेहद अलग

→ ~~दिनांक~~ : ~~29/~~02 → तारीख को ध्यान में रखिए (3/03/2020)

→ अद्भुत चीज़ें देखनी है जो आएँ विद्यालय के सभा हॉल

→ समय : सुबह 9:00 से 11:00

→ देखिए वो भी बिल्कुल मुफ्त।

Previous Pathshala